## श्री गणेश पंचरत्न स्तोत्र संस्कृत में (Ganesha Pancharatnam lyrics in Sanskrit)

मुदा करात्त मोदकं सदा विमुक्ति साधकं।

कलाधरावतंसकं विलासिलोक रक्षकम्।

अनायकैक नायकं विनाशितेभ दैत्यकं।

नताशुभाशु नाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ 1 ॥

नतेतराति भीकरं नवोदितार्क भास्वरं।

नमत्सुरारि निर्जरं नताधिकापदुद्ढरम्।

सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं।

महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरंतरम् ॥ 2 ॥

समस्त लोक शंकरं निरस्त दैत्य कुंजरं।

दरेतरोदरं वरं वरेभ वक्त्रमक्षरम्।

कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं।

मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ 3 ॥

अकिंचनार्ति मार्जनं चिरंतनोक्ति भाजनं।

पुरारि पूर्व नंदनं सुरारि गर्व चर्वणम् ।

प्रपंच नाश भीषणं धनंजयादि भूषणं।

कपोल दानवारणं भजे पुराण वारणम् ॥ 4 ॥

नितांत कांति दंत कांति मंत कांति कात्मजम्।
अचिंत्य रूपमंत हीन मंतराय कृंतनम्।
हृदंतरे निरंतरं वसंतमेव योगिनां।
तमेकदंतमेव तं विचिंतयामि संततम्॥ 5॥

महागणेश पंचरत्नमादरेण योऽन्वहं।
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां।
समाहितायु रष्टभूति मभ्युपैति सोऽचिरात्॥